

ट्रम्प ने की पाकिस्तान की तारीफ, कांग्रेस का तंज-पीएम मोदी की हग्लोमेसी हुई फेल

कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तीखा हमला करते हुए कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के पाकिस्तान-अफगानिस्तान संघर्ष पर हालिया रुख के बाद स्वघोषित विश्वगुरु का पर्दाफाश हो गया है। रमेश ने अफगानिस्तान के साथ अमेरिका के बढ़ते संघर्ष के दौरान पाकिस्तान के लिए ट्रंप के 'स्पष्ट और खुले समर्थन' को भारतीय हग्लोमेसी के लिए एक बड़ा झटका बताया।

एक पोस्ट में रमेश ने लिखा कि अफगानिस्तान के साथ युद्ध में पाकिस्तान के लिए राष्ट्रपति ट्रंप का स्पष्ट और खुला समर्थन भारतीय 'हग्लोमेसी' के लिए एक और झटका है। उन्होंने एक बार फिर उस व्यक्ति की प्रशंसा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है, जिसकी भड़काऊ टिप्पणियों ने 22 अप्रैल, 2025 को पहलगाम में हुए आतंकवादी हमलों की पृष्ठभूमि तैयार की थी, जिन्हें पाकिस्तान ने अंजाम दिया था।

भारत-अमेरिका अंतरिम व्यापार समझौते का जिक्र करते हुए उन्होंने दावा किया कि दोनों देशों के बीच आर्थिक कूटनीति 'बुरी तरह विफल' हुई है। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री ने स्पष्ट रूप से एकतरफा व्यापार समझौते पर सहमति जताई है, जिसमें भारत ने अमेरिकी किसानों से आयात करने का वादा किया है, जबकि बदले में उसे केवल अस्पष्ट रियायतें मिली हैं। पोस्ट में लिखा था कि अमेरिका के साथ हमारी आर्थिक कूटनीति बुरी तरह विफल हो गई है, जैसा कि श्री मोदी के अचानक एक स्पष्ट रूप से एकतरफा व्यापार समझौते के आगे झुक जाने से स्पष्ट होता है। इस समझौते में भारत ने विशेष रूप से अमेरिकी किसानों से आयात करने का पक्का वादा किया है, जबकि अमेरिका ने भारत

से निर्यात बढ़ाने की अस्पष्ट प्रतिबद्धताएं जताई हैं। इतना ही नहीं, समझौते के कुछ ही दिनों बाद अमेरिका ने भारत से आने वाले सोलर मॉड्यूल पर 125.87% आयात शुल्क लगा दिया।

अंतरिम समझौते में भारत द्वारा विभिन्न अमेरिकी औद्योगिक वस्तुओं, खाद्य पदार्थों और कृषि उत्पादों पर शुल्क समाप्त करने या कम करने की बात शामिल है, जबकि अमेरिका एक मौजूदा कार्यकारी आदेश के तहत कुछ भारतीय मूल की वस्तुओं पर 18 प्रतिशत का पारस्परिक शुल्क लगाता है, जिसमें समझौते के सफल समापन पर शुल्क हटाने का प्रावधान है। रमेश ने पर लिखा कि प्रधानमंत्री अपने साधनों से पुरस्कार हासिल कर सकते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि स्वघोषित विश्वगुरु का पर्दाफाश हो चुका है और दुनिया,



विशेषकर अमेरिका, उनकी असलियत जान चुकी है।

यह घटना अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा शुक्रवार (स्थानीय समय) को पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच चल रहे संघर्ष में हस्तक्षेप करने पर विचार करने की बात कहने के बाद सामने आई है, लेकिन उन्होंने पाकिस्तान के नेतृत्व के साथ अपने अच्छे संबंधों पर जोर दिया। पत्रकारों से बात करते हुए ट्रंप ने कहा कि मैं हस्तक्षेप करूंगा। लेकिन पाकिस्तान के साथ मेरे संबंध बहुत अच्छे हैं। उनके पास एक महान प्रधानमंत्री, एक महान जनरल और एक महान नेता हैं। ये दोनों ऐसे लोग हैं जिनका मैं बहुत सम्मान करता हूँ। पाकिस्तान बहुत अच्छा कर रहा है। काबुल और इस्लामाबाद के बीच तनाव बढ़ गया है, दोनों पक्ष एक-दूसरे पर जवाबी हमले का आरोप लगा रहे हैं, जिससे क्षेत्र में व्यापक सैन्य संघर्ष की आशंका बढ़ गई है।

79 के हुए दिग्विजय सिंह

राघौगढ़ से दिल्ली तक ऐसा रहा 'दिग्गी राजा' का 54 साल का सियासी सफर

नई दिल्ली। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह आज 28 फरवरी को अपना 79वां जन्मदिन मना रहे हैं। दिग्विजय सिंह अपने मिलनसार स्वभाव के लिए जाने जाते हैं। वह साल 1993 से लेकर 2003 तक सीएम रहे हैं। विरोधी भी उनकी विनम्रता के कायल हैं। वह कभी भी अपने विरोधियों के खिलाफ अक्रामक नहीं होते हैं। लेकिन अपने विरोधियों को झुकाए बिना वह निश्चिंतता से भी नहीं बैठते हैं। तो आइए जानते हैं उनके जन्मदिन के मौके पर दिग्विजय सिंह के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और परिवार- मध्यप्रदेश के इंदौर में 28 फरवरी 1947 को दिग्विजय सिंह का जन्म हुआ था। दिग्विजय सिंह मध्य प्रदेश की राघौगढ़ रियासत के राजघराने से ताल्लुक रखते हैं। उनको राजनीति विरासत में मिली थी। इनके पिता बलभद्र सिंह भी विधायक थे।

सियासी सफर- वहीं साल 1969 में महज 22 साल की उम्र में दिग्विजय सिंह ने राघौगढ़ नगर पालिका का चुनाव जीता था। जिसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। अपने 54 साल के राजनीतिक सफर में उन्होंने राघौगढ़ से

दिल्ली तक के सफर में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं।

दो बार बने एमपी के सीएम- दिग्विजय सिंह दो बार मध्यप्रदेश के सीएम रहे। साल 1993 से लेकर 2003 तक सीएम रहने के दौरान

सेवाओं में सुधार के लिए एक सहभागितापूर्ण जलग्रहण विकास कार्यक्रम, रोग कल्याण समिति, जिला गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम और जन स्वास्थ्य रक्षक-अग्रिम सरकारी प्रणाली इनमें शामिल हैं।



दिग्गी राजा- बता दें कि महाराष्ट्र की राजनीति में पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह का दबदबा आज भी है। वह अक्सर देश और राज्य की राजनीति में सुर्खियों में रहते हैं। प्रदेश की राजनीति में दिग्विजय सिंह ने अहम भूमिका निभाई है। साल 1984 में पीएम राजीव गांधी ने पूरे देश से युवा कांग्रेसियों को अपने कोर ग्रुप में जोड़ा था। इस दौरान दिग्विजय सिंह लोकसभा सांसद थे और उसी समय दिल्ली में डिनर पार्टी थी। इसमें कांग्रेस के कई बड़े नेता और पत्रकार शामिल थे।

इस डिनर पार्टी में एक अखबार के संपादक दिग्विजय सिंह से बात कर रहे थे। इस दौरान वह उनके नाम का सही तरह से उच्चारण नहीं कर पा रहे थे। जिसके चलते संपादक दिग्विजय को दिग्गी राजा कहकर बुलाने लगे। क्योंकि यह नाम छोटा और आसान था। इसी के बाद दिग्विजय सिंह का नाम दिग्गी राजा पड़ गया।



उमंग और सामाजिक स्नेह का जीवंत महोत्सव है भगोरिया पर्व : मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि फाल्गुन मास के रंगों, मांदल की थाप और जीवन-प्रेम की उमंग से सराबोर भगोरिया पर्व जनजातीय संस्कृति, सामाजिक स्नेह और परंपरागत जीवन मूल्यों का जीवंत उत्सव है। इसको प्रत्यक्ष रूप से भगोरिया पर्व में शामिल होकर जिया जा सकता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अलीराजपुर के उदयगढ़ भगोरिया पर्व स्थल पर पारंपरिक लोकधुनों, नृत्य और उल्लासपूर्ण वातावरण ने सम्पूर्ण क्षेत्र को सांस्कृतिक रंगों से भर दिया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगोरिया पर्व जनजातीय संस्कृति, प्रेम और सामाजिक समरसता का प्रतीक है। मध्यप्रदेश सरकार जनजातीय परंपराओं के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है और ऐसे सांस्कृतिक आयोजनों को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है। विरासत को विकास की राह पर ले जाने के संकल्प के साथ इस उल्लासमय पर्व को गरिमा और भव्यता के साथ मनाया गया। यह आयोजन जनजातीय संस्कृति की सशक्त

पहचान और राज्य सरकार की संवेदनशील सोच को प्रतिबिंबित करता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का जनजातीय समाज एवं स्थानीय नागरिकों द्वारा पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ भव्य स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का मंत्री जनजातीय संस्कृति के प्रतीक तीर कमान भेंट किया। प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा पुष्प-गुच्छ से स्वागत किया गया। मंत्री श्री द्वारा मंच से सभी को राष्ट्रीय पर्व भगोरिया की शुभकामनाएं दी। अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री श्री नागर सिंह ने कहा कि आलीराजपुर जिले के उदयगढ़ में आयोजित स्थानीय भगोरिया पर्व में मुख्यमंत्री डॉ. यादव की सहभागिता से उत्सव का उल्लास और अधिक बढ़ गया।

भगोरिया उत्सव में जनजातीय युवक-युवतियां रंग-बिरंगी पारंपरिक वेशभूषा में सजे-धजे दिखाई दिए। पुरुष वर्ग पारंपरिक धोती, अंगोछा एवं साफा धारण किए हुए थे, जबकि महिलाएं कांचली, घाघरा, ओढ़नी तथा पारंपरिक कढ़ाईयुक्त परिधानों में सुसज्जित रहीं।

विशेष



जकात-सिर्फ रस्म नहीं, समाज में आर्थिक इंकलाब का माध्यम

रमज़ान का पवित्र महीना न केवल इबादत का है, बल्कि सामाजिक न्याय और आर्थिक संतुलन का भी है। इस दौरान करोड़ों रुपये 'ज़कात' के नाम पर निकाले जाते हैं। लेकिन आज एक गंभीर सवाल हमारे सामने खड़ा है: क्या हमारी ज़कात किसी के 'हालात' बदल रही है या केवल कुछ घंटों के लिए किसी का 'हाथ' भर रही है? अक्सर देखा जाता है कि लोग रु. 200-300 की मामूली रकम दर्जनों लोगों में बाँट देते हैं और यह समझकर सुकून पा लेते हैं कि उनका फर्ज़ पूरा हो गया। लेकिन हकीकत यह है कि यह 'हल्की ख़ैरात' लेने वाले की मजबूरी को कम करने के बजाय उसे अगले साल फिर उसी कतार में खड़ा कर देती है।

1. ज़कात: हक, न कि उपकार

ज़कात कोई दान या भीख नहीं है जिसे अपनी मर्ज़ी से किसी पर उछाला जाए। यह 'हक' है-उनका जो महरूम हैं। मालिक नहीं, अमानतदार: इस्लाम का दर्शन स्पष्ट है कि हम अपने धन के मालिक नहीं, बल्कि खुदा की दी हुई अमानत के रखवाले हैं। सम्मान सर्वोपरि: ज़कात देते समय लेने वाले की 'इज़ज़त-ए-नफ़्स' (आत्मसम्मान) का ख़याल रखना अनिवार्य है। देने वाले के हाथ में गरूर नहीं, बल्कि कृतज्ञता होनी चाहिए कि उसे अपना माल पाक करने का मौका मिला।

2. भीड़ का मनोविज्ञान बनाम व्यक्तिगत बदलाव

सैकड़ों लोगों की भीड़ जमा करके राशन या छोटे नोट बाँटना एक 'सालाना तमाशा' तो हो सकता है, लेकिन यह सामाजिक परिवर्तन का जरिया नहीं है। दर्जनों लोगों को मामूली रकम देकर गिनती बढ़ाना बेहतर है या अपने ही किसी तंगहाल रिश्तेदार को इतना सहारा देना कि उसका कर्ज उतर जाए? अगर हम अपनी ज़कात को बिखेरने के बजाय केंद्रित (Focuesd) कर दें, तो परिणाम चौंकाने वाले होंगे। किसी एक परिवार को चुनकर उसे इस काबिल बनाना कि अगले साल वह खुद ज़कात देने वाला बन जाए, यही ज़कात की असली सफलता है।

3. रणनीतिक समाधान: कैसे बदलें हालात?

ज़कात को 'इन्वेस्टमेंट' की तरह सोचें-एक ऐसी पूँजी जो इंसान को आत्मनिर्भर बनाए।

4. नकद की अहमियत और इख्तियार

ज़कात हमेशा 'नकद' देने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। राशन या कपड़े बाँटने में हम अक्सर अपनी पसंद थोप देते हैं। नकद देने से लेने वाले को 'इख्तियार' (Choice) मिलता है। उसे अपनी ज़रूरत खुद तय करने दें। हो सकता है उसके घर में राशन से ज़्यादा ज़रूरत किसी की दवा की हो या बिजली के बिल की। जब हम उसे नकद देते हैं, तो हम उसे अपनी ज़रूरत का मालिक बनाते हैं।

5. समाज पर दीर्घकालिक प्रभाव

यदि समाज का हर साहिब-ए-हैसियत व्यक्ति एक या दो परिवारों की जिम्मेदारी ले ले, तो गरीबी का ग्राफ तेज़ी से नीचे गिर सकता है।

आर्थिक चक्र: जब गरीब आत्मनिर्भर होता है, तो वह बाज़ार में ग्राहक बनकर लौटता है, जिससे अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।

अपराध में कमी: आर्थिक तंगी से पैदा होने वाली मजबूरियाँ और अपराध कम होते हैं।

फैसला आपका है : आज हमें यह तय करना होगा कि हम सिर्फ अपने माल का बोझ हल्का कर रहे हैं या किसी की ज़िंदगी का? हम एक पुरानी रस्म निभा रहे हैं या समाज में इंकलाब ला रहे हैं? सवाल यह नहीं कि आपने कितना दिया, सवाल यह है कि आपके देने से कितनों की ज़िंदगी बदल गई। दिल पर हाथ रखकर पूछिए: अगर आपकी ज़कात से लेने वाला कल भी उतना ही मजबूर खड़ा है जितना वह आज है, तो यह आपकी सखावत की जीत नहीं, बल्कि आपके तरीके की हार है। आइए, इस साल 'हाथ भरने' के बजाय 'हालात बदलने' का संकल्प लें।

सदका केवल धर्म नहीं, एक जीवन दर्शन है-

जब तुम दूसरों के लिए आसानी पैदा करते हो, तो अल्लाह तुम्हारे लिए रास्ते आसान कर देता है। ज़कात वह चाबी है जो बंद दरवाजे खोल देती है, और वह मरहम है जो दिल के घाव भर देती है। जब भी तुम्हें पैसे मिलें-चाहे तनख़्वाह हो या लाभ-उसका कम-से-कम 2.5% तुरंत निकाल लो। नहीं पता, साल भर की मोहलत मिले या नहीं। जो मौका मिले, वही सदका का वक्त है।

मो. शारीब खान (हाईकोर्ट एडवोकेट)

आज के भारत में मुस्लिम युवा : पहचान और लक्ष्य?

इतिहास के इस महत्वपूर्ण मोड़ पर, जहाँ एक ओर प्रौद्योगिकी, व्यापार, प्रतिस्पर्धी शिक्षा और वैश्विक संपर्क से प्रेरित तेजी से बदलती दुनिया है, वहीं दूसरी ओर पहचान संबंधी चुनौतियाँ, गलत सूचनाओं का प्रकोप, राजनीतिक ध्रुवीकरण, सामाजिक रूढ़िवादिता, विचारों का टकराव और भावनाओं का हेरफेर जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। भारत के मुस्लिम युवाओं के लिए देश और समुदाय के पुनर्निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाना समय की मांग है। पिछले सप्ताह दिल्ली में अखिल भारतीय मुस्लिम मजलिस-ए-मुशावरत के सम्मेलन में मुस्लिम विद्वानों और बुद्धिजीवियों ने एक स्वर में इस बात पर जोर दिया कि इस्लाम और पैगंबर मुहम्मद के बारे में मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के दिलों और दिमागों में पैदा हो रहे संदेह और शंकाओं को गंभीरता, विवेक और शोध के साथ दूर किया जाना चाहिए। स्थिति की गंभीरता से भयभीत या निराश होने के बजाय, हमें राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए अटूट साहस के साथ आगे बढ़ना चाहिए और नई पीढ़ी को निराशा और बौद्धिक अराजकता से बचाने के लिए चिंतित होना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि मुस्लिम विद्वानों को इस बात का गहरा अहसास है कि आज के जटिल परिवेश में भारतीय मुस्लिम युवा न केवल जीवनयापन के लिए संघर्ष कर रहे हैं, बल्कि अपनी बुद्धि, आस्था और चरित्र की परीक्षा का भी सामना कर रहे हैं। उनके सामने सबसे बड़ा प्रश्न केवल मैं कौन हूँ? ही नहीं, बल्कि ठमुझे अपने राष्ट्र, अपने समुदाय और अपने धर्म के लिए क्या बनना चाहिए? भी है।

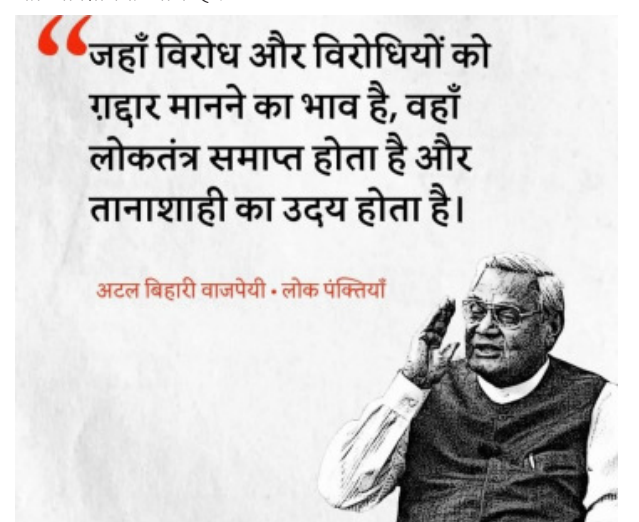
इस्लाम किसी भी अनुयायी को दिशाहीन और भ्रमित जीवन जीने की अनुमति नहीं देता। कुरान और सुन्नत स्पष्ट रूप से यह अवधारणा प्रस्तुत करते हैं कि मुसलमान होने का अर्थ है संतुलित चरित्र, संयमित इच्छाएँ, जनसेवा की भावना और उत्तरदायित्व का भाव। भारत में पहचान के मुद्दे की बात करें तो वे भारत के नागरिक हैं और उस सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं जिसका भारत की संस्कृति, ज्ञान, कला, शासन, वास्तुकला, अर्थव्यवस्था और स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हालांकि, आधुनिक युग ने नई चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। कई युवा तीन प्रमुख दबावों के कारण पहचान के संकट में फंसे हुए हैं: (1) राजनीतिक ध्रुवीकरण का दबाव, (2) वैश्विक मीडिया के प्रचार का दबाव, और (3) धर्म के नाम पर चरमपंथी विचारधाराओं का दबाव।

इस्लाम सिखाता है कि पहचान पीड़ित होने, क्रोध या प्रतिक्रियावादी भावनाओं पर आधारित नहीं होती, यह उद्देश्य और जिम्मेदारी पर आधारित होती है। अल्लाह कहता है: ठऔर इस प्रकार हमने तुम्हें एक संतुलित राष्ट्र बनाया हैठ (सूरह अल-बकरा 2:143)। यह केवल एक आध्यात्मिक शिक्षा नहीं बल्कि एक राष्ट्रीय और सभ्यतागत मिशन है। मुसलमान होने का अर्थ है संतुलित और जिम्मेदार होना—न तो चरमपंथी और न ही उदासीन। भारत जैसे बहुराष्ट्रीय समाज में यह संतुलन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। आज भारतीय युवाओं के लिए सबसे गंभीर खतरों में से एक चरमपंथी ताकतों द्वारा बिछाया गया वैचारिक जाल है, और चरमपंथ किसी एक धर्म या राजनीतिक विचारधारा तक सीमित नहीं है। चरमपंथ अनेक रूपों में मौजूद है: हिंसा और घृणा को बढ़ावा देने वाला धार्मिक चरमपंथ, सड़कों पर झड़पों को भड़काने वाला राजनीतिक चरमपंथ, और षड्यंत्र सिद्धांतों और कट्टरपंथी विचारों को फैलाने वाला डिजिटल चरमपंथ। कई चरमपंथी समूह मुस्लिम युवाओं को केवल एक ही उद्देश्य के साथ जीना चाहते हैं: क्रोध और टकराव। वे उन्हें भावनात्मक रूप से अस्थिर, सामाजिक रूप से अलग-थलग और बौद्धिक रूप से बंजर रखना चाहते हैं। कुरान अतिवाद की निंदा करता है: ठअपने धर्म में अतिवाद न करोठ (सूरह अन-निसा 4:171)। पैगंबर ने चेतावनी दी: ठधर्म में अतिवाद से बचो, क्योंकि तुमसे पहले के लोग अतिवाद के कारण नष्ट हो गए (सुनन इब्न माजा)। कोई भी विचारधारा जो मुस्लिम युवाओं को अनावश्यक संघर्ष, हिंसा या घृणा की ओर धकेलती है, वह इस्लामी नहीं है - यह इस्लाम के विरुद्ध शत्रुता और इस्लाम के साथ विश्वासघात है। जो लोग युवाओं की ऊर्जा को लूटने की कोशिश करते हैं, उन्हें शिक्षा और रोजगार से दूर धकेलते हैं और उन्हें भावनात्मक उथल-पुथल की ओर ले जाते हैं, वे धर्म के शत्रु हैं। कुरान अल्लाह के सच्चे सेवकों को शांतिप्रिय और बुद्धिमान बताता है: ठकृपालु के सेवक वे हैं जो धरती पर विनम्रता से चलते हैं, और जब अज्ञानी लोग उनसे कठोरता से पेश आते हैं, तो वे

शांति के शब्दों से उत्तर देते हैंठ (सूरह अल-फुरकान 25:63)। यह आयत हमें सिखाती है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में, एक विश्वासी अपना आपा नहीं खोता, उकसाने वालों के जाल में नहीं फंसता और उनसे उलझने से बचता है, बल्कि, वे रणनीति, धैर्य और आत्म-संयम के साथ कार्य करते हैं, हर परिस्थिति में गरिमा बनाए रखते हैं क्योंकि इस्लाम की पहली प्राथमिकता शांति है। हिंसा का मार्ग लक्ष्यों को नष्ट कर देता है। पैगंबर ने कहा: ठबलवान वह नहीं है जो अपनी ताकत से लोगों पर हावी होता है, बल्कि बलवान वह है जो क्रोध में खुद पर नियंत्रण रखता हैठ (सही बुखारी, सही मुस्लिम)। एक मुसलमान को भावनात्मक रूप से मजबूत होना चाहिए, न कि केवल भावुक और उग्र।

आधुनिक भारत एक खुली अर्थव्यवस्था और नेटवर्क-आधारित समाज है जहाँ कौशल, संबंध और सहयोग के माध्यम से अवसर मिलते हैं। कई युवा संदेह, भय, अविश्वास या अपने सीमित दायरे पर अत्यधिक निर्भरता की मानसिकता के कारण अलगाव का शिकार हो जाते हैं। इसके विपरीत, इस्लाम ने सामाजिक शक्ति का पाठ पढ़ाया। हमारे प्रिय पैगंबर ने संबंधों, भाईचारे, विश्वास और एकता के माध्यम से एक समाज का निर्माण किया, जैसा कि उन्होंने कहा: एक विश्वासी दूसरे विश्वासी के लिए उस इमारत के समान है जिसके विभिन्न भाग एक दूसरे को मजबूत करते हैं (सही बुखारी)। अलगाव कमजोरी है, जुड़ाव शक्ति है, बशर्ते कि ये जुड़ाव मूल्यों पर आधारित हों। इस्लाम समाज के साथ जुड़ाव को प्रोत्साहित करता है। भारत में मुस्लिम युवाओं की सबसे बड़ी आवश्यकता ज्ञान और कौशल है, और इसी प्रकार, भारत को मुस्लिम युवाओं की आवश्यकता है। शिक्षा आज की दुनिया में अस्तित्व और प्रगति के लिए सबसे शक्तिशाली संसाधन है, और सामाजिक सेवा भारतीय समाज की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक है। लाखों लोग गरीबी, निरक्षरता, बेरोजगारी, स्वास्थ्य संकट, नशा और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे हैं। हमारे युवाओं को इसे महज ठकिसी और की समस्याठ नहीं समझना चाहिए, बल्कि इस्लाम का सच्चा चेहरा दिखाने का अवसर समझना चाहिए। अल्लाह फरमाते हैं: और नेकी और धर्मपरायणता में सहयोग करो (सूरह अल-माईदा 5:2)। इस्लाम में समाज सेवा कोई विकल्प नहीं है, बल्कि आस्था का एक अभिन्न अंग है। पैगंबर ने फरमाया: सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति वह है जो लोगों के लिए सबसे अधिक लाभकारी हो (मुअज्जम अल-अवसात)। यदि आप नागरिक समाज और सामाजिक सेवाओं में दूसरों का नेतृत्व करते हैं, तो आप स्वाभाविक रूप से समाज में सम्मान, विश्वास और प्रभाव प्राप्त करते हैं, और सामाजिक पुनर्निर्माण का यह तरीका सुन्नत है।

इस परिप्रेक्ष्य से, भारतीय मुस्लिम युवाओं को एक ऐसे दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो पहचान की राजनीति से परे हो; उनका लक्ष्य देश और राष्ट्र का पुनर्निर्माण होना चाहिए। मुस्लिम युवा भारत पर बोझ नहीं हैं; वे भारत के भविष्य के लिए एक शक्तिशाली संपत्ति हैं। कुरान कहता है: नि:संदेह, अल्लाह किसी कौम की हालात तब तक नहीं बदलेगा जब तक वे अपने भीतर परिवर्तन न कर लें (सूरह अर-राद 13:11)। यही समय की पुकार है। भारतीय मुस्लिम युवाओं को उठ खड़ा होना चाहिए-हिंसा से नहीं, घृणा से नहीं, बल्कि ज्ञान, चरित्र, सेवा और नवाचार से, राष्ट्र निर्माण के लिए। यही कुरान का मार्ग है, पैगंबर का मिशन है और समकालीन भारत की वास्तविक मांग है।



अटल बिहारी वाजपेयी • लोक पंक्तियाँ

जे.के. मेमोरियल स्कूल में स्पोर्ट्स कार्निवाल सम्पन्न



इंदौर। जे. के. मेमोरियल कान्वेंट हॉयर सेकन्डरी स्कूल में स्पोर्ट्स कार्निवाल सम्पन्न हुआ। स्पोर्ट्स कार्निवाल दिसम्बर अंतिम सप्ताह से जनवरी प्रथम सप्ताह तक चला। कार्निवाल में खो-खो, कबड्डी, बास्केट-बाल, टेनिस, सिम्पल रेस, लेमन रेस, चैयर रेस, टारगेट सेट, टग ऑफ वॉर, स्किपिंग, चेस, केरम, बलून रेस, आदि खेल गतिविधियां सम्मेलित रहीं। कार्निवाल में तकरीबन 700 विद्यार्थियों ने और 40 शिक्षक शिक्षिकाओं ने भाग लिया। प्रथम विजेता 100, द्वितीय विजेता 100 और तीसरे स्थान पड़े रहने वाले 50 विद्यार्थी रहे जबकि 15 विजेताओं के रूप में शिक्षक भी थे। इस तरह कुल 250 बच्चे और 15 शिक्षक - शिक्षिकाओं को विजेता ट्रॉफी से सम्मानित किया गया। साल भर की ओवर ऑल गतिविधियों को देखते हुए 12 वी क्लास कि छात्रा आलमीन शफीक को स्टूडेंट ऑफ द ईयर अवॉर्ड से नवाज़ा गया। जबकि 10 वी क्लास के स्टूडेंट शाकिब को बेस्ट अटेंडेंस के अवॉर्ड से नवाज़ा गया वहीं टीचर्स में बेस्ट अटेंडेंस अवॉर्ड दिनेश कुमार चौहान सर को मिला। स्पोर्ट्स कार्निवाल का यह सम्मान समारोह



पिछले दिनों स्कूल कैंपस में ही सम्पन्न हुआ। इस स्पोर्ट्स कार्निवाल के सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि मेवाती ट्रस्ट के ट्रस्टी - शम्सउद्दीन चिश्ती (अध्यक्ष), एडवोकेट मुहम्मद शारीब खान, मोहम्मद अय्यूब खान (ए. बी. स्टिचिंग), आसिफ

मेव, वहीं खजराना एजुकेशनल सोसाइटी के अध्यक्ष अंसार पटेल साहब और सचिव डॉक्टर अनीस साहब व इस्लामिया कारिमिया कॉलेज से प्रोफेसर डॉक्टर असद खान साहब, अनहद प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के अध्यक्ष सूरज कानोडिया जी, प्रथम एकेडमी हॉयर सेकन्डरी स्कूल के संचालक भूपेन्द्र ठाकुर जी और न्यू अपोस्टोलिक हॉयर सेकन्डरी स्कूल के संचालक एडवीन मसीह जी, आजाद मनॉरटी स्कूल एसोसिएशन के अध्यक्ष मुश्ताक खान सर और गोल्डन लाइफ स्कूल ए संचालक जावेद खान सर, डॉक्टर ए. पी. जे. अब्दुल कलाम स्कूल के संचालक अब्दुल माजिद, इफलाह एकेडमी के संचालक इमरान नियाजी और पत्रकार शेख शाकिर आए। जे के मेमोरियल कान्वेंट स्कूल के संचालक अब्दुल हफीज बनारसी ने स्वागत भाषण दिया वहीं स्कूल शिक्षिका गुलताज खान ने संचालन की बागडोर संभाली और शिक्षिका फिरदोस खान ने आए सभी मेहमानों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के अंत में स्कूल संचालक अब्दुल हफीज बनारसी ने सभी मेहमानों को स्मृति चिन्ह के रूप में मोमेंटो और एक पेन और डायरी भेंट की।

पत्रकार आबिद दाइन्दा बरी : सच लिखने की सज़ा देने की विद्युत विभाग की साजिश हुई नाकाम

4 साल बाद पत्रकार आबिद खान को न्यायालय ने किया दोषमुक्त, एड. दिनेश शर्मा की दमदार पैरवी ने पलटी बाजी

फतेहपुर (सीकर)। कलम की ताकत से डरकर अगर सत्ता और तंत्र मिलकर किसी पत्रकार को झूठे मुकदमे में फँसा दे, तो क्या वो सच दब जाता है? जवाब है-नहीं!

कहते हैं सत्य परेशान हो सकता है मगर पराजित नहीं। ऐसा ही विद्युत विभाग के अधिकारियों द्वारा जयपुर गुलाबी टाइम्स के पत्रकार आबिद खान दाइन्दा के खिलाफ रची गई साजिश और इस बहुचर्चित मामले में देखने को मिला है। जिसमें सत्य परेशान तो हुआ, मगर अंततः पराजित नहीं हुआ। चार साल के लंबे संघर्ष के बाद अदालत के इस फैसले ने यह सवाल पूरे सिस्टम के सामने खड़ा कर दिया है। कि सत्य को कुचला नहीं जा सकता है।

अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट फतेहपुर अजय कुमार पूनिया की अदालत ने विद्युत विभाग के अधिकारियों द्वारा पत्रकार आबिद खान दाइन्दा के खिलाफ दर्ज 'राजकार्य में बाधा' के मामले को अविश्वसनीय मानते हुए उन्हें धारा 353 भा.दं.सं. के आरोप से दोषमुक्त (बरी) कर दिया है। यह फैसला सिर्फ एक मुकदमे का अंत नहीं, बल्कि झूठ, पद के दुरुपयोग और बदले की राजनीति पर करारा तमाचा है।

विद्युत विभाग की तानाशाही: भ्रष्टाचार ढंकने को बनाया था मुकदमे को हथियार?

विद्युत विभाग के जिन अधिकारियों को जनता की सेवा की शपथ लेनी थी, वे अपनी करतूतों को छिपाने के लिए खाकी और कानून के साथ 'गठबंधन' कर बैठे। भ्रष्टाचार के दलदल में डूबे इन सफेदपोशों ने एक सजग पत्रकार आबिद खान की आवाज़ को कुचलने के लिए सरकारी मशीनरी का निर्लज्जता से दुरुपयोग किया। अधिकारियों ने अपनी रंजिश निकालने के लिए कानून को अपना निजी औज़ार बना लिया, लेकिन वे भूल गए कि न्याय की चौखट पर झूठ के पैर टिकते नहीं हैं। विभाग की यह साजिश सिर्फ एक पत्रकार के खिलाफ नहीं, बल्कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की हत्या का घृणित प्रयास था।

सिस्टम की सच्चाई लिखी, तो सिस्टम ने मुकदमा थोप दिया क्या था पूरा मामला?

पूरा मामला उन खबरों से शुरू हुआ, जिनमें पत्रकार आबिद खान दाइन्दा ने सीकर की अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड की फतेहपुर सिटी विद्युत शाखा में चल रही गंभीर अनियमितताओं को उजागर किया था। आबिद खान ने निडरता से इन मुद्दों की परतें खोली थीं:

डेड लाइनों से डॉग वायर तार चोरी का मामला।

बिना अनुमति हरे पेड़ों की अवैध कटाई। कार्यालय में टेक्निकल हेल्पर तोसिब खान और राजू गोदारा की निगबके आदेश के बावजूद संदिग्ध तैनाती।

सरकारी कॉलोनी में निजी व्यक्तियों का अवैध कब्जा।

रामगढ़ क्षेत्र में ट्रांसफार्मर चोरी के मामलों में संदिग्ध भूमिका। जैसे मामले आबिद खान ने साहस के साथ जनहित में उठाए थे।

खबरें प्रकाशित होते ही दबाव, धमकी और रंजिश का दौर शुरू हो गया। स्थिति इतनी बिगड़ी कि आबिद खान को अपनी जान का खतरा महसूस होने लगा, जिसके सीसीटीवी सबूत लेकर 28 मार्च 2022 को उन्होंने एसपी सीकर व एसडीएम फतेहपुर को हमले की साजिश की आशंका जताते हुए लिखित शिकायत दी थी।

एसडीएम कोर्ट ने पहले ही माना था अधिकारियों से खतरा, वन विभाग ने भी लगाया था जुर्माना..

पत्रकार की शिकायत पर एसडीएम न्यायालय ने विद्युत विभाग के अधिकारियों-सहायक अभियंता रविंद्र कुमार बिजारनिया, कनिष्ठ अभियंता सुनील कुमार गोदारा, तोसिब खान, राजू गोदारा और राकेश पंडित को 107/116 में पाबंद किया था। न्यायालय के नोटिस में साफ था कि इनके कृत्यों से कानून-व्यवस्था बिगड़ सकती है।

यही नहीं, AEN रविंद्र कुमार ने वन विभाग को पत्र लिख कर उसमें साफ कहा था कि आबिद खान हरे पेड़ खुद कटवाता हैं और मुझे बदनाम करने के लिए झूठी खबर छापता हैं। मगर वन विभाग ने मुकदमा दर्ज कर हरे पेड़ों की कटाई की खबर की गहन जांच की और विद्युत विभाग में काम करने वाली कंपनी संध्या एंड कंपनी पर

जुर्माना भी लगाया, था जिससे पत्रकार आबिद खान की खबरों की सत्यता प्रमाणित हो गई थी।

बनावटी मुकदमे की पटकथा और 'कोतवाली' की भूमिका?

इन घटनाओं से आहत होकर 29 अप्रैल 2022 को तत्कालीन फतेहपुर के कोतवाल उदय सिंह के कार्यकाल में विद्युत विभाग के अधिकारियों AEN रविंद्र बिजारनिया KEN सुनील कुमार गोदारा तोसिब खान राजू गोदारा ने पत्रकार की कलम को कुचलने के लिए एक मनगढ़ंत कहानी बनाई और पुलिस के साथ गंठजोड़ कर एफआईआर संख्या 78/2022 दर्ज कराकर आरोप लगाया कि पत्रकार ने दफ्तर में घुसकर रजिस्टर फाड़ा और स्टाफ को धमकाया। और हमें धमकाने का कार्य करता हैं। कोतवाली पुलिस ने भी दबाव में कार्य करते हुए आधी-अधूरी जांच कर जल्दबाजी में चालान पेश कर दिया, जो अब न्यायालय में साबित हो चुका है।

न्यायालय में ढहा विद्युत विभाग के झूठ का किला.. जांच अधिकारी पर गिरी गाज

मुकदमे के दौरान अभियोजन ने 11 गवाह पेश किए, लेकिन अदालत ने सख्त टिप्पणी की हैं कि परिवादी के अलावा किसी ने घटना अपनी आंखों से नहीं देखी। कथित फटा हुआ रजिस्टर और वीडियो पेनड्राइव फाइल में थे ही नहीं। फोन पर धमकाने के आरोप भी झूठे निकले।

न्यायालय का सख्त रुख: अदालत ने माना कि जांच में गंभीर खामियां हैं। न्यायालय ने पुलिस अधीक्षक सीकर व पुलिस महानिदेशक राजस्थान (DGP) को निर्देश दिया कि पुलिस जांच अधिकारी के खिलाफ तीन माह में जांच कर सख्त कार्रवाई की जाए। यह आदेश इस पूरे प्रकरण का सबसे अहम हिस्सा है।

एडवोकेट दिनेश शर्मा की निर्णायक पैरवी-इस 4 साल की लड़ाई में आबिद खान की ओर से एडवोकेट दिनेश शर्मा ने चट्टान की तरह खड़े रहकर पैरवी की हैं। शर्मा ने अपनी सटीक जिरह से अभियोजन के विरोधाभास उजागर किए और यह साबित किया कि यह मुकदमा सिर्फ पाबंदी की कार्यवाही और खबरों से आहत होकर सहायक अभियंता रविंद्र कुमार ने बदला लेने के

मकसद से आबिद के खिलाफ दर्ज करवाया गया था। चट्टान की तरह खड़े इस वकील ने अपने अनुभव के दम पर न्यायालय के सामने विद्युत विभाग के एक एक गवाह से सच निकलवाया उनकी दमदार दलीलों के सामने विद्युत विभाग के मंसूबों पर पानी फिर गया हैं।

अकेले लड़ा, पर नहीं डिगा हौसला-इन चार वर्षों में पत्रकार आबिद खान ने क्या खोया, इसका हिसाब आज कोई विभाग नहीं दे सकता। समाज की आवाज़ उठाने वाले इस कलम के सिपाही ने चार साल तक जो मानसिक शारीरिक प्रताड़नाएं झेली, अपनों की चिंता और 'अपराधी' होने का झूठा ठप्पा लेकर जिस दर्द के साथ रातें काटीं, वह किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं था।

ये आंसू सिर्फ जीत के नहीं, बल्कि उस पीड़ा के हैं जो उन्होंने सच की कीमत चुकाते हुए झेली है। उनके अटूट विश्वास ने साबित कर दिया कि जब इंसान सच के साथ खड़ा हो, तो खुदा खुद उसकी गवाही देता है।

चार वर्षों तक झूठे मुकदमे का बोझ, मानसिक पीड़ा और सामाजिक दबाव झेलने के बावजूद पर्यावरण प्रेमी पत्रकार आबिद खान दाइन्दा का हौसला नहीं डगमगाया। वे अकेले डटे रहे और अंततः सच की जीत हुई।

इस प्रकरण में माननीय अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट अजय कुमार पूनिया की अदालत ने निष्पक्षता, संवेदनशीलता और विधिक स्पष्टता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। तथ्य, साक्ष्य और कानून के आधार पर दिया गया यह निर्णय न्यायपालिका में आमजन के विश्वास को और अधिक सुदृढ़ करता है।

यह फैसला उन तमाम पत्रकारों के लिए उम्मीद है, जो सच लिखने के अपराध में झूठे मुकदमों का सामना कर रहे हैं।

झूठे मुकदमों से पत्रकारों की आवाज़ दबाई जा सकती है, लेकिन न्यायपालिका के सामने सच को ज्यादा देर तक कैद नहीं रखा जा सकता।

तो वही दूसरी एडवोकेट दिनेश शर्मा और आबिद खान ने इसे सच्चाई की जीत बताया हैं।

इंजी. वसीम अकरम

पाक माह रमजान

नूर ही नूर बरस रहा है,
जन्नत के से नजारे हैं।
सहरी-इफ्तारी की महफिल,
सुंदर-सुखद बहारें हैं।।
स्याम माह झूमके आया,
अहो भाग्य हमारे हैं।
मोमिन की तो बात हा क्या,
ये गैरों को भी प्यारे हैं।।
सारे जग रहमत बरसे है,
बेशक रोजे तुम्हारे हैं।
आसमान से देख फरिश्ते,
मन ही मन मुस्काते हैं।।
चहुँओर हो अमन-शांति,
रब को तो सब प्यारे हैं।
भूख-प्यास रब को मोमिन के,
हर लज्जत से दुलारे हैं।।
मोमिन तेरे सब-संयम से,
सबके ही वारे-न्यारे हैं।
स्याम माह झूमने आया,
अहो भाग्य हमारे हैं।।

-सिद्दीक अहमद मेव

मौलाना इलियास और मेवाती समाज

नई दिल्ली। मौलाना इलियास और मेवाती : 1933 की सर्दियों में, मौलाना इलियास अपने 200 से अधिक मेव मुसलमान अनुयायियों को लेकर दिल्ली पहुँचे। वहाँ उन्होंने दारुल उलूम देवबंद के प्रमुख मौलाना हुसैन अहमद मदनी के साथ मिलकर उन्हें तबलीग के काम (दावत-ए-दीन) की अहमियत समझाई!

इसके बाद इन मेव मुसलमानों को छोटी-छोटी जमाअतों में बाँटा गया और उन्हें आसपास के कस्बों और गाँवों में भेजा गया, ताकि वे लोगों को नमाज़, कलिमा और दीन की बुनियादी बातें याद दिला सकें। जब ये जमाअतें अपना काम पूरा कर लौटीं, तो मौलाना इलियास ने आठ मेव साथियों की एक विशेष जमाअत बनाई। इस जमाअत में नंबरदार मेहराब खान, मौलवी अब्दुल्ला, हाफिज़ अब्दुर रहमान, मुंशी नसरुल्लाह, मौलवी इब्राहीम, हाजी सदुल्लाह और दो अन्य साथी शामिल थे। मुंशी नसरुल्लाह को इस जमाअत का अमीर (नेतृत्व करने वाला) बनाया गया।

इस जमाअत को थाना भवन (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) भेजा गया, जो बड़े आलिम और सूफी

मौलाना अशरफ अली थानवी का मरकज़ (केंद्र) था। शुरुआत में मौलाना थानवी इस जमाअत को लेकर मुतरद्दिद (संदेह में) थे। उन्हें डर था कि ये लोग, जो ज़्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे, कहीं समाज में फ़ितना (झगड़ा) न पैदा कर दें। लेकिन जब उन्हें बताया गया कि ये मेव मुसलमान सिर्फ-

तबलीग के छह उसूल, नमाज़ की पाबंदी, और अमल (खुद करके दिखाने) की दावत दे रहे हैं, तो उन्होंने उन्हें जुमे की नमाज़ में शामिल होने की इजाज़त दे दी। नमाज़ के बाद जमाअत के लोगों ने मौलाना थानवी से मुलाक़ात की और उन्हें तबलीग के उसूल समझाए। इसके बाद वे उन्हें अपने साथ ग़श्त (इलाक़े में घूमकर दावत देना) पर ले गए। ग़श्त के दौरान मौलाना थानवी ने देखा कि आसपास के बहुत से मुसलमान नियमित नमाज़ नहीं पढ़ते थे, और कई लोगों को कलिमा तक मालूम नहीं था।

अमल की ताक़त: मेव जमाअत का तरीक़ा मेव जमाअत के लोगों ने बिना थके और बिना किसी विवाद के- लोगों को मस्जिद की ओर बुलाया, उन्हें कलिमा सिखाया, और दीन से



जोड़ने की कोशिश की। उनका तरीक़ा बहस नहीं, बल्कि अमल था। वे जो कहते थे, पहले खुद करते थे। मेव मुसलमानों की इस सादगी, मेहनत और इख़लास से मौलाना अशरफ़ अली थानवी गहराई से प्रभावित हुए। थाना भवन की एक मजलिस में उन्होंने कहा- अगर सहाबा को देखना हो, तो इन तबलीगी जमाअत के लोगों को देखो। यह बात सिर्फ़ तारीफ़ नहीं थी, बल्कि मेव मुसलमानों के अमल, अनुशासन और सामूहिक ज़िम्मेदारी की खुली स्वीकृति थी। तबलीगी जमाअत के इतिहास में मेव मुसलमानों की भूमिका बुनियादी और निर्णायक रही। **-प्रो. अल्ताफ हुसैन**

जिला कांग्रेस कार्यालय नूंह में महत्वपूर्ण बैठक

नूंह। जिला कांग्रेस कार्यालय, नूंह में जिला अध्यक्ष Chaudhary Shahida Khan (पूर्व विधायक) की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई।

बैठक में केंद्र सरकार की नीतियों पर विस्तृत चर्चा हुई। नेताओं ने मनरेगा बचाओ, किसान विरोधी ट्रेड डील तथा श्रमिक विरोधी लेबर कोड जैसे मुद्दों को जनविरोधी बताते हुए इनके खिलाफ लोकतांत्रिक तरीके से संघर्ष करने का संकल्प लिया। वक्ताओं ने कहा कि ये नीतियां गरीब, किसान और मजदूर वर्ग के हितों के विपरीत हैं और कांग्रेस पार्टी इनके विरोध में सड़क से सदन तक आवाज बुलंद करेगी।

मेवात से राज्यसभा प्रतिनिधित्व की मांग- बैठक में मेवात क्षेत्र में कांग्रेस की मजबूत उपस्थिति और चार विधायकों के योगदान का उल्लेख करते

हुए मेवात से राज्यसभा में प्रतिनिधित्व दिए जाने की मांग सर्वसम्मति से उठाई गई। नेताओं का कहना था कि क्षेत्र की राजनीतिक भागीदारी और सामाजिक योगदान को देखते हुए यह मांग न्यायसंगत है।

संगठन मजबूती का संकल्प- बैठक में उपस्थित वरिष्ठ नेताओं, पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने संगठन को और मजबूत बनाने तथा जनहित के मुद्दों पर एकजुट होकर संघर्ष करने का संकल्प लिया।

बैठक में उपस्थित प्रमुख नेताओं में जिलाध्यक्ष चौधरी शहीदा खान (पूर्व विधायक), पूर्व मंत्री एवं विधायक चौधरी आफताब अहमद, चौधरी अख्तर हुसैन काटपुरी, चौधरी महताब अहमद, नेहा खान इंजीनियर इब्राहिम खान, उपाध्यक्ष हाजी सुबराती पटवारी, यूथ अध्यक्ष मुबीन, शाहीन शम्स, एडवोकेट साहुन, मकसूद सिकरवा, रज्जाक

पटवारी, उपाध्यक्ष हाजी सोराब, उपाध्यक्ष आरिफ, संगठन महासचिव अजहरुदीन सरपंच, कोषाध्यक्ष खुशीद, महासचिव आसिफ अली चन्देनी, महासचिव अंजुम, साजिद सरपंच रेवासन, मुबारिक लौहटकी, महासचिव विनयपाल यादव, महासचिव वहीद, महासचिव हासिम गंगवानी, महासचिव खुशीद अहमद, सचिव हुसैनदीन कुरैशी, सचिव तौफीक चिला, सचिव प्रदीप कुमार, सचिव असगर टाई, सचिव दयाराम, सचिव लियाकत अली, सचिव शमशेर लुहिगा, सचिव तौफीक, सचिव जुनैद पथराली, सचिव इकरून, सचिव मोहम्मद अरशद, सचिव रुकुमुदीन, सचिव गेंदा खान, सचिव अशराक, सचिव शाकिर, शाकीर लाहबास, जान मोहम्मद बेंडेड, शरीफ पहलवान, मम्मू बादली, शौकत भाई, सलमान भाई, इरफान धुलावट, अल्मू शिकारपुर, तालीम गंगवानी सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

-मुबारिक



मंसूरी समाज प्रदेश अध्यक्ष सम्मानित

अरीब सोसाइटी, इंदौर शहर के मुस्लिम समाज के लिए अत्यंत प्रशंसनीय एवं सराहनीय कार्य कर रही है। सोसाइटी द्वारा प्रत्येक वर्ष समाज की भलाई के लिए निरंतर कार्य करने वाले समाजसेवियों को सम्मानित किया जाता है। इसी क्रम में इस वर्ष मंसूरी समाज 53 गोत्र एजुकेशनल एवं वेलफेयर सोसाइटी के-प्रदेश अध्यक्ष: शरीफ मंसूरी, जिला अध्यक्ष: वकील मंसूरी एवं अन्य सदस्यों का अरीब सोसाइटी द्वारा सम्मान किया गया। हम अरीब सोसाइटी के इस सम्मान एवं सहयोग के लिए दिल से शुक्रिया करते हैं।

नफरत को मुहब्बत से मिटाया जा सकता है : मौलाना हकीमुद्दीन अशरफ उटावडी

नफरत मुल्क को कमजोर कर रही है, भाईचारे और इंसानियत को आम करना वक्त की अहम जरूरत: मौलाना अनवार मालपुरी

मुहम्मद मुबारक मेवाती पलवल मेवात। समाज में बढ़ती नफरत और आपसी दूरियां देश की एकता और तरक्की के लिए गंभीर खतरा बनती जा रही हैं। नफरत का जवाब नफरत नहीं, बल्कि मुहब्बत, सब्र और इंसानियत से दिया जा सकता है। ये बातें जमीअत उलामा पलवल के अध्यक्ष मौलाना लुकमान कासमी ने अपने निवास पर आयोजित एक मुलाकात के दौरान कही। मौलाना लुकमान कासमी ने कहा आज सोशल मीडिया और अफवाहों के जरिए लोगों के दिलों में जहर घोलने की कोशिश की जा रही है। छोटी-छोटी बातों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है, जिससे समाज में गलतफहमियां पैदा होती हैं। उन्होंने कहा, हमारी जिम्मेदारी है कि हम लोगों को सब्र, तहम्मूल और आपसी इज्जत का रास्ता दिखाएं। इस मुल्क की खूबसूरती इसकी गंगा-जमुनी तहजीब और आपसी मोहब्बत में है। अगर हम इसे कमजोर होने देंगे तो आने वाली नस्लें हमें माफ नहीं करेंगी। उन्होंने बताया कि जमीअत उलमा-ए-हिन्द के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना सैय्यद अरशद

मदनी की हिदायत पर देशभर में जमीअत के कार्यकर्ता अमन और भाईचारे के मिशन पर काम कर रहे हैं। पलवल में भी मसाजिद, मदरसों और सामाजिक मंचों के जरिए मुहब्बत और एकता का पैगाम आम किया जा रहा है। जमीअत



उलामा मुतहिदा पंजाब के अध्यक्ष मौलाना हकीमुद्दीन अशरफ उटावडी ने कहा मजहब इंसान को जोड़ने का पैगाम देता है, तोड़ने का नहीं। उन्होंने कहा, हमारी कोशिश है कि हर तबके तक यह संदेश पहुंचे कि मुल्क की सलामती आपसी इत्तेहाद में है। अगर समाज का हर जिम्मेदार शख्स अपने स्तर पर नफरत के खिलाफ खड़ा हो जाए तो हालात जरूर बदल सकते हैं। उन्होंने उलेमा, बुद्धिजीवियों और नौजवानों से अपील की कि वे सामाजिक सद्भाव को मजबूत करने में सक्रिय भूमिका निभाएं। इस मौके पर मुहम्मद मुबारक आली

मेव ने कहा कि मीडिया और समाज के जागरूक लोगों की जिम्मेदारी है कि वे सकारात्मक खबरों और भाईचारे के पैगाम को आगे बढ़ाएं। उन्होंने कहा, आज जरूरत इस बात की है कि हम सच्चाई, इंसानियत और अमन की आवाज को बुलंद करें। अगर हम खामोश रहे तो नफरत फैलाने वाले ताकतवर हो जाएंगे। इसलिए हर नागरिक को चाहिए कि वह अपने स्तर पर मोहब्बत, भाईचारे और इंसानियत को बढ़ावा दे। जमीअत उलामा पलवल के सरपरस्त मौलाना अनवार मालपुरी के मशवरे से चल रही इस मुहिम के तहत गांव-गांव और मोहल्लों में बैठकों का सिलसिला जारी है। लोगों को अफवाहों से बचने, आपसी मतभेद बातचीत से सुलझाने और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का संदेश दिया जा रहा है।

अंत में मौलाना लुकमान कासमी ने कहा कि जमीअत उलामा पलवल आगे भी समाज सुधार, अमन और इंसानियत के मिशन को मजबूती से जारी रखेगी, ताकि नफरत की जगह मुहब्बत और भाईचारा कायम हो सके और मुल्क तरक्की की राह पर आगे बढ़ता रहे।



सद्भावना का सराहनीय काम

चेन्नई के मायलापुर स्थित Sufidar Temple पिछले चार दशकों से रमज़ान में रोज़ा रखने वाले लोगों के लिए इफ्तार भोजन तैयार कर रहा है। इस पहल की शुरुआत सिंध से विभाजन के समय आए हिंदू शरणार्थी दादा रतनचंद ने की थी।

हर सुबह करीब 7:30 बजे विभिन्न समुदायों के स्वयंसेवक मिलकर शाकाहारी भोजन तैयार करते हैं जिसमें फ्राइड राइस, वेज बिरयानी, सब्जी का अचार, केसर वाला दूध और फल शामिल होते हैं। प्रतिदिन लगभग 1,200 लोगों के लिए भोजन बनाया जाता है।

शाम को यह भोजन पास का Waqajahed Mosq भेजा जाता है, जहाँ 60-70 स्वयंसेवक मिलकर इसे रोज़ेदारों में वितरित करते हैं। वितरण के दौरान कई स्वयंसेवक मुस्लिम टोपी पहनते हैं, ताकि परंपराओं का सम्मान बना रहे। इस पहल की सराहना आर्कोट के शाही परिवार से जुड़े Prince Nawab Abduled Alid ने भी की है। उनका कहना है कि भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में एक-दूसरे के धर्म का सम्मान ही असली एकता है।

यह परंपरा केवल भोजन तक सीमित नहीं है-यह आपसी विश्वास, सहयोग और भाईचारे की मिसाल बन चुकी है।

13 साल बाद कुटबा दंगा मामले में फैसला : 37 आरोपी बरी, न्याय व्यवस्था पर उठे सवाल

मुज़फ़्फ़रनगर (उत्तर प्रदेश)। फरवरी 2026। 2013 के चर्चित Mu&waffarnagar riots से जुड़े कुटबा गांव हिंसा मामले में 13 साल बाद अदालत ने बड़ा फैसला सुनाया है। अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश मंजुला भालोटिया की अदालत ने सबूतों के अभाव में 37 आरोपियों को बरी कर दिया।

क्या था मामला?

8 सितंबर 2013 को मुज़फ़्फ़रनगर जिले के शाहपुर थाना क्षेत्र के कुटबा गांव में सांप्रदायिक हिंसा भड़क उठी थी। आरोप था कि एक भीड़ ने मुस्लिम समुदाय के घरों पर हमला कर आगजनी और लूटपाट की। इस घटना में 8 लोगों की मौत हुई थी, जिनमें एक महिला भी शामिल थी।

घटना के बाद मो. इमरान ने लगभग 110

लोगों के खिलाफ FIR दर्ज कराई थी। जांच और ट्रायल के दौरान 8 आरोपियों की मृत्यु हो गई थी, जबकि शेष 37 के खिलाफ मुकदमा जारी रहा। अदालत ने क्या कहा?

अदालत ने अपने फैसले में कहा कि अभियोजन पक्ष आरोपों को संदेह से परे साबित करने में असफल रहा।

कई गवाह अपने बयानों से मुकर गए (hostile हो गए)।

आरोपियों की पहचान स्पष्ट रूप से स्थापित नहीं हो सकी।

साक्ष्यों में गंभीर असंगतियां पाई गईं।

इन्हीं आधारों पर अदालत ने सभी 37 आरोपियों को बरी कर दिया।

व्यापक संदर्भ

2013 के मुज़फ़्फ़रनगर दंगों में 60 से अधिक लोगों की जान गई थी और हजारों लोग विस्थापित हुए थे। इन दंगों से जुड़े कई मामलों में हाल के वर्षों में सबूतों की कमी के आधार पर आरोपियों को बरी किए जाने के फैसले सामने आए हैं।

इस ताज़ा फैसले के बाद एक बार फिर न्यायिक प्रक्रिया, जांच की गुणवत्ता और गवाहों की सुरक्षा को लेकर सवाल उठ रहे हैं। पीड़ित परिवारों और सामाजिक संगठनों का कहना है कि लंबे समय बाद न्याय न मिलना व्यवस्था पर गंभीर प्रश्न खड़े करता है।

आगे क्या?

कानूनी विशेषज्ञों के अनुसार, अभियोजन पक्ष के पास उच्च न्यायालय में अपील का विकल्प

मौजूद है। हालांकि, इतने लंबे समय के बाद गवाहों की उपलब्धता और साक्ष्यों की मजबूती बड़ी चुनौती बन सकती है।

देश में जितने भी मुसलमान विरोधी दंगे हुए हैं उनमें लगभग किसी में न्याय नहीं मिला, सभी में लगभग आरोपी ऐसे ही बरी किये गए ह! या यह भी कह सकते हैं मुस्लिमों को कमजोर करने कि यह एक बहुत बड़ी साजिश है जो आजादी के बाद से ही शुरुआत हुई है और आज तक जारी है जिससे मुस्लिमों को सामाजिक, आर्थिक व राजनितिक रूप से कमजोर किया जा सके!

इतनी घटनाओं के बाद भी अल्पसंख्यक मुस्लिमों ने अपने सामाजिक व राजनीतिक संगठन मजबूत नहीं किये यह भी अल्पसंख्यक समुदाय के सामने एक चिंता का विषय है!



कामा-जोतरुहल्ला (अंधवाडी) में मास्टर महबूब साहब के बेटे की शादी के वालीमे में सीए मुख्तार अहमद एवं साथियों ने शिरकत कर मुबारकबाद पेश की। इस अवसर पर गांव के जिम्मेदार साथियों से मुलाकात हुई।

घर में बीवी की मदद करना सुन्नत है, और इसमें कोई ऐब नहीं

शैख मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन रहमतुल्लाह अलैहि ने फरमाया: जब इंसान अपने घर में हो तो सुन्नत यह है कि मिसाल के तौर पर अपने लिए चाय खुद बना ले, अगर खाना पकाना जानता हो तो खुद पका ले, और जो चीज़ धोने की ज़रूरत हो उसे धो ले-यह सब सुन्नत में से है। अगर तुम यह काम करोगे तो तुम्हें सुन्नत पर अमल करने का सवाब मिलेगा, क्योंकि यह रसूलुल्लाह की इक़तदा और तवाजु है। और इसलिए भी कि यह तुम्हारे और तुम्हारे घर वालों के दरमियान मुहब्बत पैदा करता है। जब घर वाले महसूस करें कि तुम उनके काम में मदद करते हो तो वह तुम से मुहब्बत करेंगे और तुम्हारी क़द्र व मंज़िलत उनके नज़दीक बढ़ जाएगी, और इसमें बहुत बड़ी मसलहत है।

अयाना खान को मुबारकबाद

हमें बेहद खुशी और गर्व है अलवर मेवात एवं विकास संस्थान के निदेशक श्रीमान नूरमोहम्मद जी की सुपुत्री अयाना खान ने Law Faculty में UGCed-NET Qualified कर एक बड़ी कामयाबी हासिल की है, यह उपलब्धि न सिर्फ उनके परिवार बल्कि पूरे मेवात के लिए फ़ख्र का मुकाम है।

अब अयाना खान के लिए PhD और Asistant Profeser बनने का रास्ता और भी आसान हो गया है।

अयाना खान का मुख्य लक्ष्य kudiaryed है और तीन साल की अनिवार्य कोर्ट प्रैक्टिस के दौरान वह न्यायिक सेवा की तैयारी के साथ-साथ अपनी PhD भी मुकम्मल करेंगी।

आज मेवात की बेटियां तालीम, कानून, प्रशासन और हर क्षेत्र में आगे बढ़कर यह साबित कर रही हैं कि अगर हौसला और मेहनत हो तो कोई भी मंज़िल दूर नहीं है। आयना खान को दिली मुबारकबाद और आने वाले उज्ज्वल भविष्य के लिए ढेरों दुआएं शुभकामनाएं।



इंदौर। उमराह से वापस आने पर मेवाती मोहल्ले में निसार चिश्ती, जलील खां, अफजल खां का इस्तकबाल करते हुए एमपी आर्टिकल के साजिद मेव, मलिक मेव, महबूब मेव, शकील अंसारी एवं साथी।

शादी मुबारक

मंदसौर में जनाब जमील अहमद चौधरी साहब के पोते एवं कामिल चौधरी के साहबजादे लक्की चौधरी की शादी पिपलिया मंडी के बसीम खान की साहबजादी अजमी मेव से 11 फरवरी 2026 को और पोती एवं कामिल चौधरी की साहबजादी रोशनी चौधरी की शादी बांसवाड़ा के जनाब फिरोज खान साहब के साहबजादे फरहान खान से 12 फरवरी 2026 को पुर सुकून और मोहब्बत के साथ संपन्न हुई।



आप दोनों पर गर्व है, क्योंकि आज देश को भाषण नहीं, ऐसे ही बहादुर और संवेदनशील लोगों की ज़रूरत है। दीपक अकेला नहीं है, पूरा देश उसके साथ खड़ा है। भाईचारा का यह उजाला किसी भी नफ़रत के अंधेरे से ज़्यादा ताक़तवर है।

इंतकाल

इंदौर। मेव बिरादरी के जनाब हाजी आदिल मेव ग्रीन पार्क वालों की भाभी का पिछले दिनों इंतकाल हो गया। आपको सुपुर्देखाक महुनाका कब्रस्तान में किया गया।

उज्जैन। मेव बिरादरी के जनाब रफीक खां (कल्लू भाई) जावरावालों की बीवी शहजाद बी का इंतकाल हो गया। जिन्हें सुपुर्देखाक ईदगाह कब्रस्तान में किया गया।

ताजपुर। शाकिर खां वल्लद हकीम खां मौलाना का पिछले दिनों इंतकाल हो गया। जिन्हें सुपुर्देखाक स्थानीय कब्रस्तान में किया गया।

अतवासा। मेवाती बिरादरी के छीतू दादा नाई का पिछले दिनों इंतकाल हो गया। जिन्हें स्थानीय कब्रस्तान में सुपुर्देखाक किया गया।

झिकड़ी। मेवाती बिरादरी के मरहूम हाजी इब्राहीम खां के लड़के रईस खां का पिछले दिनों इंतकाल हो गया। जिन्हें स्थानीय कब्रस्तान में सुपुर्देखाक किया गया।



उज्जैन। मोहतरम मेव बिरादरान अस्सलामु अलेयकुम बहुत ही खुशी के साथ और अल्लाह के फजलो करम से और आप लोगों की दुआओं से मेव छात्रावास एवं गार्डन के लिए दो बीघा जमीन कार्मल स्कूल के पास आगर रोड उज्जैन मेव पंचायत उज्जैन की जानिब से जमीन का सौदा कर लिया गया है जमीन के लिए मेव पंचायत अध्यक्ष एवं पदाधिकारीयो ने बिरादरी के लोगों से मुलाकात कर जमीन के लिए ताऊन की दरखास्त की गई इस काम से बिरादरी के लोगों में खुशी की लहर देखने को मिली एवं लोगों ने अपनी खुशी से चंदे में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और सभी ने ताऊन देने में अपना नाम लिखाया एवं कुछ भाईयो ने नगद ताऊन दिया।-मेव पंचायत उज्जैन

खामोश खिदमतगार

नियत हो पाक, दिल में सच्ची इबादत का उजाला हो, खिदमत का हर क़दम बस रब की रज़ा का हवाला हो। तन-मन-धन सबकुछ कुर्बान करने का जज़्बा हो सीने में, अपना ही नहीं दूसरों के दुख दर्द भी अपना समझने वाला हो। फोटो की चमक, अखबारों की स्याही से हो क्या हासिल, खिदमत का असल चेहरा तो खामोशी का लिबास वाला हो। मंच की कुर्सी छूट जाए तो दिल में शिकवा कैसा, जिसको रूह-ए-सेवा मिली हो, वो कहाँ मतवाला हो। जिसे मंच पर मिले न कुर्सी, जो टोली में फ़साद जगाए, वो सेवादर नहीं जिसके सीने झूठी शोहरत की ज्वाला हो। हर बात में साज़िश, हर लफ़्ज़ में जो अपनी चाल छुपाए, ऐसा चेहरा नहीं, हमें तो चाहिए जो साफ़ दिल वाला हो। जो परदे के पीछे रहकर रौशन सी राह दिखाए, उसका हर एक छोटा अमल भी सूरज सा उजाला हो। हर मजलूम की आह को जो अपनी आह समझ ले, उसकी आँख का हर एक आँसू समझो असली प्याला हो। थोड़ा सा देकर फोटो में दुख का मेला सजाना, ऐसी झूठी रहमत से बेहतर अपना खाली निवाला हो। खिदमत वो नहीं जो दुनिया के पर्दे पर बिक जाए, सच्ची खिदमत वही है जिसका ज्यादा न बोलबाला हो। कहता है 'हफ़ीज़' पहचान उसी सच्चे बंदे को, जिसका हर क़दम इंसानियत का रौशन उजाला हो।



-अब्दुल हफीज बनारसी
(शिक्षाविद ,समाज सेवी और रचनाकार)

रजिस्ट्रेशन आफ न्यूज पेपर (सेंट्रल) रूल्स, १९५६ के अंतर्गत मासिक समाचार पत्र **न्यू मेव टाइम्स** के स्वामित्व एवं अन्य विवरण के संबंध में

घोषणा

फार्म -४ (नियम ८ देखिए)

- प्रकाशन का स्थान : २५, मेवाती मोहल्ला, इंदौर
- प्रकाशन की अवधि : मासिक
- मुद्रक, प्रकाशक, संपादक का नाम : मो. हनीफ चिश्ती मेव (एड.)
- क्या भारत का नागरिक है ? : हाँ
- पता : २५, मेवाती मोहल्ला, इंदौर
- सम्पादक का नाम : मो. हनीफ चिश्ती मेव (एड.)
- उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक से हिस्सेदार हों : मो. हनीफ चिश्ती मेव (एड.)

मैं मो. हनीफ चिश्ती (एडवोकेट) एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक- 1 मार्च 2026

मो. हनीफ चिश्ती मेव (एड.)

प्रकाशक के हस्ताक्षर

बंटवारा एक लकीर जिसने दिलों को बाँट दिया



लेखक : रियाज़ नूर मेव कसूर (पाक)

1947 उपमहाद्वीप के इतिहास का वह साल है जिसे याद करते हुए आज भी लाखों दिल भारी हो जाते हैं। भारत का विभाजन केवल एक राजनीतिक फैसला नहीं था, यह करोड़ों इंसानों की तकदीर का मोड़ था। एक लकीर खींची गई और सदियों से साथ रहने वाले लोग दो मुल्कों में बाँट गए — पाकिस्तान और भारत।

मेरा परिवार भी उन लाखों परिवारों में शामिल था जिनकी ज़िंदगी इस फैसले से बदल गई।

बाँटवारे से पहले हमारा पैतृक घर राजस्थान के ज़िले भरतपुर की तहसील कामां के गाँव नगला कुंदन में था। वह सिर्फ़ ज़मीन का एक टुकड़ा नहीं था, बल्कि हमारी पहचान, हमारी जड़ें और हमारे बुजुर्गों की अमानत था। मेरे दादा वहाँ नंबरदार थे, इज़्ज़त और सम्मान के साथ जीवन बिताते थे। विस्तृत ज़मीनें थीं, परिवार एकजुट था और भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता था।

लेकिन इतिहास के एक फैसले ने सब कुछ बदल दिया।

हमारा परिवार दो दादाओं की औलाद पर आधारित था। बाँटवारे की अफरा-तफरी में एक दादा हिंदुस्तान में रह गए और मेरे दादा तीन छोटे बच्चों को लेकर पाकिस्तान हिजरत कर आए। न कोई आखिरी मुलाक़ात, न गले लगकर विदाई — सिर्फ़ अनिश्चितता, डर और जुदाई।

सोचता हूँ उस पल मेरे दादा के दिल पर क्या गुज़री होगी? एक तरफ़ अपनी मिट्टी, अपना भाई, अपने पुरखों की कब्रेंछ दूसरी तरफ़ बच्चों की हिफ़ाज़त और एक नए मुल्क में नई ज़िंदगी की चुनौती।

मेरा जन्म 1975 में हुआ, मगर ऐसा लगता है जैसे 1947 का दर्द मेरे भीतर भी सांस लेता रहा है। मेरी वालिदा हमें अक्सर रात

को मेवात की कहानियाँ सुनाती थीं। वह बतातीं कि हमारा परिवार वहाँ किस तरह इज़्ज़त से रहता था, हमारे रिश्तेदार आज भी वहाँ आबाद हैं और हमारा गाँव शायद आज भी वैसा ही होगा जैसा छोड़कर आए थे।

इन कहानियों ने मेरे अंदर एक अजीब बेचैनी पैदा कर दी। मैं उन रिश्तेदारों से मिलना चाहता था जिन्हें कभी देखा नहीं था। मैं उस गाँव की गलियों में चलना चाहता था जिसे सिर्फ़ कल्पना में जानता था।

लेकिन हकीकत यह थी कि सरहदें बंद थीं, संसाधन सीमित थे और दोनों मुल्कों के रिश्ते अक्सर तनावपूर्ण रहे।

वक्त गुज़रता गया, मगर दिल की तड़प कम न हुई। फिर सोशल मीडिया का दौर आया। मैंने 'रहबर मेवात' के नाम से एक प्लेटफॉर्म बनाया। यह केवल एक पेज या चैनल नहीं था, बल्कि एक मिशन था — बिछड़े परिवारों को मिलाने का मिशन।

मैं सिंध और पंजाब के उन इलाकों में गया जहाँ मेव समुदाय की बड़ी तादाद आबाद है। मैंने उन बुजुर्गों से मुलाक़ात की जिन्होंने बाँटवारा अपनी आँखों से देखा था। मैं उनसे उनके पुराने गाँव, गोत्र, परिवार, दोस्तों और रिश्तेदारों के नाम पूछता। जब वे बोलते तो उनकी आवाज़ काँपती, आँखों में नमी होती और चेहरे पर यादों का दर्द साफ़ दिखाई देता।

मैंने इन तमाम कहानियों को एक कार्यक्रम की शक्ल दी जिसका नाम रखा 'मेरा गाँव मेरी पहचान'। इस कार्यक्रम ने वह काम किया जो शायद सरकारी संस्थाएँ भी न कर सकीं। सरहद के दोनों तरफ़ बिछड़े परिवार एक-दूसरे तक पहुँचने लगे। सोशल मीडिया के जरिए संपर्क बहाल हुए, फोन कॉल हुईं, वीडियो कॉल हुईं और कई परिवार दशकों बाद फिर से जुड़ सके।

वे दृश्य शब्दों में बयान करना मुश्किल है जब एक माँ अपने बिछड़े भाई या बेटे की आवाज़ सुनते ही रो पड़ती थी। जब बहनें दशकों बाद एक-दूसरे का नाम लेकर पुकारती थीं। वे पल मेरे लिए सबसे बड़ी कामयाबी थे।

इसी जज़्बे के तहत मैंने बाँटवारे के दर्द पर आधारित गीत भी रिकॉर्ड करवाए। उन गीतों ने लोगों के दिलों में छुपी यादों को आवाज़ दी। बहुत से लोग, जो अपने रिश्तों को लगभग भुला चुके थे, फिर से तलाश में निकल पड़े।

अल्लाह तआला का शुक्र है कि इस सफर में मेरा अपना परिवार भी फिर से जुड़ गया। संपर्क बहाल हुए, बातचीत शुरू हुई, उम्मीद जगी। लेकिन हालात ने एक बार फिर रास्ता रोक लिया। दोनों मुल्कों के रिश्तों में तनाव ने इस मानवीय संपर्क को प्रभावित किया। अब हमारे रिश्तेदार खुलकर बात भी नहीं कर पाते।

यह स्थिति दिल को दुख देती है। आखिर आम इंसानों का क्या कसूर है? वे तो सिर्फ़ अपने रिश्तों को ज़िंदा रखना चाहते हैं, अपने बुजुर्गों की यादों को सँजोना चाहते हैं।

मेरा यकीन है कि राजनीतिक हालात हमेशा एक जैसे नहीं रहते। जिस तरह इतिहास ने जुदाई देखी, वैसे ही वह मिलन भी देख सकता है। सरहदें अस्थायी होती हैं, रिश्ते स्थायी होते हैं।

मेरी दुआ है कि एक दिन हालात फिर बेहतर हों। लोग वीज़ा और डर के बिना एक-दूसरे से मिल सकें। मेवात के बिछड़े बेटे फिर एक-दूसरे को गले लगा सकें। और वह लकीर जो 1947 में खींची गई थी, कम से कम दिलों से मिट जाए। यह सिर्फ़ मेरी कहानी नहीं, यह लाखों मेव परिवारों की कहानी है। यह सिर्फ़ अतीत का मातम नहीं, भविष्य की उम्मीद भी है। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमारे बिछड़े रिश्तों को फिर से जोड़ दे।

25 साल बाद पढ़ाई की लौ जगी

बिलकिस बनी गांव की पहली दसवीं पास महिला

तिजारा।

आजादी के 79 वर्ष बाद तिजारा विकासखंड के गांव शादीपुर में इतिहास रचते हुए बिलकिस ने राजस्थान स्टेट ओपन से दसवीं परीक्षा उत्तीर्ण कर गांव की पहली महिला बनने का गौरव हासिल किया है। उन्होंने 60 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।

बिलकिस ने बताया कि पांचवीं के बाद 25 वर्ष पहले पढ़ाई छूट गई थी और विवाह के बाद शिक्षा की उम्मीद भी टूट चुकी थी। वर्ष 2022 में गांव में अलवर मेवात शिक्षा एवं विकास संस्थान (एमिड) तथा अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के सहयोग से बालिका शिक्षा केंद्र खुला। ड्रॉपआउट किशोरियों और महिलाओं के लिए शुरू किए गए इस केंद्र ने बिलकिस को फिर से पढ़ाई से जोड़ा। परिवार और समाज की आशंकाओं के बीच पति अब्बास के समर्थन से उन्होंने ओपन बोर्ड में फार्म भरा और नियमित अध्ययन किया। शिक्षा केंद्र पर बालगीत, चेतना गीत और गतिविधि-आधारित शिक्षण से उनका आत्मविश्वास बढ़ा। एमिड संस्था के सचिव नूर मोहम्मद ने परिवार को शिक्षा का महत्व समझाया, जिससे सहयोग का माहौल बना। बिलकिस के साथ उनकी बेटी कैटरीना ने भी दसवीं का फॉर्म भरा है; एक विषय में पूरक आने के बावजूद वह आगे नियमित पढ़ाई कर सफलता की ओर बढ़ रही हैं। गांव में आवागमन के सीमित



साधन और आजीविका के लिए कृषि-पशुपालन पर निर्भरता के बीच शिक्षा के प्रति जागरूकता अब बढ़ रही है। बिलकिस की सफलता से गांव में खुशी का माहौल है। महिलाएं और अभिभावक कह रहे हैं—झ्रंगर 25 साल बाद बिलकिस दसवीं पास कर सकती हैं, तो गांव की हर बेटी पढ़ सकती है। झ्रंगर बिलकिस ने अपनी उपलब्धि का श्रेय एमिड संस्था, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन और नूर मोहम्मद को देते हुए आभार व्यक्त किया है।



जश्ने शादी

इंदौर। संस्था तहजीब की जानिब से 10 वी इज्तिमाई शादी का प्रोग्राम पिछले दिनों बम्बई बाजार में रखा गया इसमें मेव टाइम्स (चिश्ती परिवार) की तरफ से हाजी शकील अंसारी और साजिद मेव ने शिरकत कर आरिफ राइन (अध्यक्ष) को सफल प्रोग्राम की मुबारक बाद दी।



सांगली शहर में अतिक्रमण के नाम पर कार्रवाई के विरोध में मीटिंग

सांगली शहर में अतिक्रमण के नाम पर म्युनिसिपल कमिशनर द्वारा आम दुकानदारों और छोटे कारोबारियों के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ ह्यूमन राइट्स जस्टिस एसोसिएशन ने छोटे कारोबारियों और दुकानदारों की एक अहम मीटिंग आयोजित की।

संस्था का स्पष्ट ऐलान- ह्यूमन राइट्स जस्टिस एसोसिएशन छोटे व्यापारियों और दुकानदारों के हक और अधिकार की लड़ाई में हमेशा उनके साथ खड़ी रहेगी।

संस्था ने कानूनी रहनुमा की भूमिका निभाने और अन्याय के खिलाफ मजबूती से आवाज उठाने का संकल्प लिया।

मीटिंग का मार्गदर्शन किया:

-स्टेट प्रेसिडेंट-नासिर सैयद

-नेशनल जनरल सेक्रेटरी-हनीफ दफ़ेदार

स्टेट कोऑर्डिनेटर-अहमद शेख

**नमाज कायम करो
जकात देते रहो**

उटावड़ की ऐतिहासिक मेवाती महापंचायत में 5 कड़े प्रस्ताव पारित

नशा, दहेज, गौतस्करी व अश्लीलता पर प्रहार; शिक्षा सुधार को जनआंदोलन बनाने का संकल्प

न्यू मेव टाइम्स/शौकत अली खान

पलवल/मेवात। हथीन क्षेत्र के सबसे बड़े गांव उटावड़ में आयोजित ऐतिहासिक मेवाती महापंचायत में सामाजिक बुराइयों के खिलाफ निर्णायक हुंकार भरी गई। करीब 20 हजार लोगों की मौजूदगी में समाज ने नशा, दहेज प्रथा, गौतस्करी, सोशल मीडिया अश्लीलता और शिक्षा की गिरती गुणवत्ता के विरुद्ध पांच बड़े प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए।

महापंचायत की अध्यक्षता प्रसिद्ध धर्मगुरु मौलाना याहया करीमी ने की, जबकि आयोजन हथीन के विधायक चौधरी इसराइल व समस्त छिरकलौत पाल के तत्वावधान में हुआ। सभा में छत्तीस बिरादरी के गणमान्य लोगों के साथ भारी जनसमूह उपस्थित रहा।

मंच से हथीन विधायक मोहम्मद इसराइल चौधरी ने प्रस्तावों का एजेंडा पढ़कर सुनाया, जिसे उपस्थित जनसमूह ने हाथ उठाकर पारित किया। इस अवसर पर नूह विधायक चौधरी आफताब अहमद, पूर्व मंत्री जाहिदा खान, विधायक मामन खान इंजीनियर, पूर्व डिप्टी स्पीकर आजाद मोहम्मद, चौधरी जाकिर हुसैन वक्फ बोर्ड प्रशासक, पूर्व विधायक नसीम अहमद, पूर्व विधायक हबीबुर्रहमान नूह, पूर्व विधायक सहीदा खान, पूर्व विधायक रहीसा खान, जावेद अहमद सहित अनेक जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

महापंचायत के पांच बड़े फैसले शादी में सादगी का संकल्प :-

फिजूलखर्ची, अनावश्यक रस्मों, डीजे और दिखावे पर रोक। सीमित मेहमानों की उपस्थिति और तय मेहर की व्यवस्था लागू करने पर सहमति।

गोकशी पर सख्ती:-

पहचान और समझाइश के बाद दोषियों पर सामाजिक दंड व कड़ी कार्रवाई का निर्णय।

नशा व साइबर अपराध पर वार:-

नशे की सप्लाई चेन तोड़ने, युवाओं की काउंसलिंग और जागरूकता अभियान चलाने का फैसला।

सोशल मीडिया अश्लीलता पर निगरानी:-

अश्लील सामग्री के प्रसार पर सामाजिक निगरानी और समझाइश की नीति अपनाई जाएगी।

आप सबकी मेहनत, लगन, संजीदगी और समाज के मौजूदा हालात पर चिंता, रंग लाई और पिछले दिनों 'शहीद दादा बाहड़ चौक', मरकज, उटावड़ में आयोजित महापंचायत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। सन् 1932 के बाद यह पहला अवसर था जब हरियाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश और दिल्ली के मेवाती सरदार (राजनैतिक, उलेमा, चौधरी और समाज सेवक) एक साथ, एक मंच पर बैठे और उजड़ते हुई मेवात की स्थिति पर चिंतन-मनन किया। मुख्यालय से महापंचायत में पाँच मुद्दे रखे गए; 1-दहेज 2-गौकशी/गीताश्री 3-नशा 4-शोसल मीडिया पर परोसी जा रही अश्लीलता 5-शिक्षा और संस्कार।

सभी वक्ताओं को यह खास हिदायत थी कि इन्हीं पाँच मुद्दों पर अपनी बात रखें। सबसे आलिम हजरत ने दीन की रोशनी में इन पाँच मुद्दों पर संजीदगी से अपने विचार रखे। उसके बाद राजनेताओं, चौधरियों और समाज सेवकों ने अपने-अपने विचार रखे। सभी वक्ताओं ने मेवाती समाज के वर्तमान हालात पर गहरी चिंता व्यक्त की। छिरकलौत पाल के इस प्रयास के भूरि-भूरि प्रशंसा की और इस सिलसिले को जारी रखने का अहद किया। अंत में उपरोक्त सभी मुद्दों के कारण और उनके निवारण पर एक प्रस्ताव पारित हुआ। सभी नेताओं, चौधरियों, आलिमों, समाज सेवकों ने इस प्रस्ताव की तारीफ की और अंत में महापंचायत के सदर मौलवी याहया करीमी साहब ने, इस प्रस्ताव पर अमल करने की शपथ दिलाई। उसके बाद छिरकलौत पाल के सभी चौधरियों की उपस्थिति में मौलवी हकीमिद्दीन साहिब ने छिरकलौत पाल की तरफ से सभी का शुक्रिया अदा किया।

कई युवाओं और समाज सेवकों समय न मिलने की शिकायत रही। वो मायूस न हों, इंशाअल्लाह ये सिलसिला जारी रहेगा और आप सबकी भावनाओं का ख्याल रखा जाएगा। यह तो महज एक शुरुआत थी जिसने आगे बढ़ने के लिए एक आधार तैयार किया है। उत्तराखंड से आए एक आलिम जनाब ज़ा खान रिजवी ने बहुत सार्थक बात कही, ठमैने इस तरह की पंचायत पहली बार देखी है और इसे देखकर मैं अभिभूत हूँ। मेवातियों के बारे में मैंने जितना पढ़ा है और समझा है मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि ये एक सबसे अलग तरह की कौम है, जो जिस बात को ठान लेती है उसे करक दिखाती है। इंशाअल्लाह अल्लाह भविष्य में उनके ये शब्द, मेवात के विषय में सार्थक साबित होंगे। हम सकारात्मक और आशकवान रहें। नकारात्मकता और निराशा, वीर और साहसी लोगों को शोभा नहीं देती।

-सिद्दीक अहमद मेव

शिक्षा सुधार पर विशेष जोर:-

गुणवत्ता शिक्षा, अध्यापकों की जवाबदेही तय करने तथा पंचायत और एसएमसी की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करने का संकल्प।

हर स्तर पर बनेगी निगरानी कमेटी।

प्रस्तावों को लागू करने के लिए केंद्रीय, जिला, खंड, तहसील, गांव और मोहल्ला स्तर पर कमेटियों का गठन होगा। सभी कमेटियों की मासिक बैठक अनिवार्य होगी। पहले समझाइश, फिर आवश्यकता पड़ने पर प्रशासनिक सहयोग लेने की नीति अपनाई जाएगी।

महापंचायत ने स्पष्ट किया कि सबसे पहले आलिम, जनप्रतिनिधि और सामाजिक प्रबुद्धजन स्वयं इन प्रस्तावों का पालन करेंगे। कुरीतियों में लिप्त पाए जाने वालों के सामाजिक कार्यक्रमों में भागीदारी पर रोक लगाने का भी निर्णय लिया गया।

समापन अवसर पर मौलाना याहया करीमी ने सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने की शपथ दिलाई, जबकि मौलाना हकीमुद्दीन असरफ उटावड़ी ने दुआ के साथ कार्यक्रम का समापन किया। आयोजन व्यवस्था हथीन के युवा नेता नाजिम चौधरी ने संभाली।

सभा में हजारों लोगों ने एक स्वर में कहा कि उटावड़ की यह महापंचायत समाज सुधार की दिशा में ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित होगी।

महापंचायत में इमरान खान तिजारा, समसुद्दीन सम्स धौज, रशीद मध्यप्रदेश, अख्तर हुसैन काटपुरी, तैय्यब हुसैन घासेडिया, चौधरी जावेद अहमद एडवोकेट, जावेद अहमद सोहना, हाजी इशाक पचानका, नेहा खान, अताउल्ला सरपंच, कासिम महं, मुफ्ती आजम खान, मुफ्ती सलीम कासमी, मौलाना अनवार मालपुरी, सिद्दीक अहमद मेव, रमजान चौधरी, दीन मोहम्मद (मामलिका), हारून चिरकलौत, शेर मोहम्मद (एड.), ब्लॉक पार्षद शौकत अली खान मनकाकी, तारिफ सरपंच उटावड़, हकीम जमालुद्दीन कोटिया दिल्ली, जान मोहम्मद सरपंच रूपडाका, इदरीस उटावड़, आसू पूर्व सरपंच, प्रोफेसर रहीस खान झांडा, अंसार खान उटावड़, वसीम अहमद ब्लॉक समिति पार्षद, वसीम अकरम, आलम उटावड़, सहित हजारों लोग मौजूद रहे।



सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक मो. हनीफ चिश्ती मेव के लिए स्वास्तिक प्रिंटिंग प्रेस द्वारा राजा ऑफसेट प्रिन्टर्स, नेहरू नगर, इन्दौर से मुद्रित होकर, २५, मेवाती मोहल्ला, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित।
मो. 9425032443, प्रसार प्रमुख- लाखनसिंह यादव (किसी भी वाद-विवाद में न्याय का क्षेत्र इन्दौर रहेगा।) Email-newmeotimes@gmail.com (*पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)